विचार बिन्दु

नशा करने वाले मित्र से भले कोई कितना ही प्रेम क्यों ना करता हो, पर जब निर्भर करने का अवसर आता है तो वह भरोसा उस पर करता है जो नशा न करता हो। –शरतचंद्र

सुरक्षा मानकों की ही जानकारी नहीं तो कैसे रुकेंगे सड़क हादसे

बात थोडी समझ में कम आने वाली है पर इसे सिरे से खारिज भी नहीं किया जा सकता कि देश की राजधानी दिल्ली में निवास करने वाले 90 प्रतिशत लोगों को सडक सुरक्षा मानकों की पूरी तरह से जानकारी नही है। साल दर साल सडक हादसों और सडक हादसों के कारण हताहत व मौत के मुहं में समाने वालों के आंकडे कम होने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। कम्युनिटी अगेंस्ट ड्रंकन ड्राइविंग (कैड) द्वारा अगस्त, 2023 से 31 दिसबंर 2023 तक दिल्ली में कराये गये सर्वे की रिपोर्ट तो यही कह रही है। थोडी देर के लिए सर्वे रिपोर्ट को भी अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा कर बताई हुई मान लें तब भी सडक दुर्घटना के आंकडों से तो मुंह नहीं मोडा जा सकता। एक बात और साफ हो जाती है कि जब देश की राजधानी दिल्ली के यह हाल है तो फिर गांव कस्बावासियों में सडक सुरक्षा मानकों का पूरा ज्ञान होने की अपेक्षा करना पूरी तरह से बेमानी होगी। कैड के संस्थापक प्रिस सिंघल की माने तो सडक हादसों का सबसे बडा कारण लोगों को सडक सुरक्षा मानकों की जानकारी नहीं होना है।

सरकार द्वारा भले ही लाख दावें किये जाते हों कि वाहनों के चलाने के लिए जारी होने वाले ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने से पहले परीक्षा ली जाती है। जांच परख कर ही लाइसेंस जारी होते हैं पर हकीकत कुछ और ही सामने आती है। कैड के दिल्ली के सर्वे में ही यह सामने आया है। सही मायने में लोगों को अधिकांश जानकारी एक-दूसरे को देखकर ही मिलती है। यही कारणा है कि नियमों की पालना के प्रति जो गंभीरता होनी चाहिए वह दिखाई ही नहीं देती। दिल्ली में ही 93 फीसदी लोगों को पता नहीं है ब्लेक स्पॉट कहां-कहां है? सड़क पर चलने वाले 67 फीसदी लोग अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हैं। कहा तो यहां तक जाता है कि अधिकांश लोगों द्वारा लाइसेंस लेने के लिए टेस्ट ही नहीं दिया जाता। दलालों के माध्यम से घर बैठे लाइसेंस मिल जाते हैं। ऐसे में सडक हादसों में कमी की आश करना दिवा स्वप्न देखने की तरह ही है।

आज जो हालात सामने हैं उसमें घर से निकलने के बाद सकुशल वापिस पहुंचना किसी उपलब्धि से कम नहीं माना जाता। एक और सड़कों की हालात, दूसरी और यातायात के बढ़ते दबाव के चलते रोड रेज की घटनाएं और रही-सही कसर यातायात नियमों की पूरी जानकारी नहीं होने से सड़क हादसों में कमी होने का नाम ही नहीं लिया जा रहा है। कहा तो यहां तक जाता है कि अधिकांश लोगों द्वारा लाइसेंस लेने के लिए टेस्ट ही नहीं दिया जाता। दलालों के माध्यम से घर बैठे लाइसेंस मिल जाते हैं। ऐसे में सड़क हादसों में कमी की आश करना दिवा स्वप्न देखने की तरह ही है।

आज जो हालात सामने हैं उसमें घर से निकलने के बाद सकुशल वापिस पहुंचना किसी उपलब्धि से कम नहीं माना जाता। एक और सडकों की हालात, दूसरी और यातायात का बढ़ता दबाव, तीसरा युवाओं में अत्यधिक आक्रामकता के चलते रोड रेज की घटनाएं और रही-सही कसर यातायात नियमों की पूरी जानकारी नहीं होने से सडक हादसों में कमी होने का नाम ही नहीं लिया जा रहा है। मजे की बात तो यहां तक है कि रेड लाईट पर वाहन जेब्रा क्रॉस पर ही खड़े मिलेंगे तो दूसरी और अधिकांश आम नागरिक भी सड़क पार करते समय ना तो जेब्रा क्रॉस या फुट आवेर ब्रिज का उपयोग ही नहीं करते। यह अपने आप में बड़ी लापरवाही होने के साथ ही हादसों को न्योता देने वाली स्थिति है। वाहनों में जिस तरह से लाईट लगी आने लगी है और जिस तरह से आधी लाईट को पहले काला करके रखने की सख्ती से पालना होती थी और यहां तक देखा जाता था कि पुलिस वाले या एनजीओ के लोग चौराहों पर काला कलर लेकर खडे रहने के साथ ही स्वंय वाहन की लाईट के उपरी आधे हिस्से को काले रंग से पोत देते थे ताकि सामने वाले पर सीधे रोशनी ना पड़े और वह आसानी से देख सके कि सामने वाहन किस गति से आ रहा है। वाहनों में साइड में मुडने के पहले इंडिकेटर देने के लिए इंडिकेटर तो होते हैं पर उसके उपयोग में भी लापरवाही देखने को मिल जाती है। दरअसल देखा जाए तो आम आदमी भी सड़क सुरक्षा मानकों की पालना के प्रति उतना गंभीर नहीं दिखता जितना होना चाहिए। इसमें एक बड़ा कारण नियमों की जानकारी की कमी व अवेयरनेस की कमी होना आम है।

दर असल सडक हादसें रोकने हैं तो हमें लोगों को जागरुक तो करना ही होगा। किसी जमाने में जब सिनेमा हॉल में कोई पिक्चर देखने जाते थे तो जागरुकता से जुड़ी सरकारी डॉक्यूमेंटरी को भी दिखाया जाता था। सामान्यत: इंटरवेल के ठीक बाद फिल्म ऐसी जागरुकता वाली डॉक्यूमेंटरी के बाद ही चलती थी। चैनलों पर आने वाले कार्यक्रमों के बीच विज्ञापनों की तरह ही जागरुकता की इस तरह की डॉक्यूमेंटरी दिखाने के लिए बाध्य किया जाएं भले ही दिन में एकाध बार ही हो तो उसका असर देखने को मिलेगा। इसके लिए लोकप्रिय धारावाहिकों या न्यूज के दौरान कुछ सेकेण्ड्स की क्लिपिंग के माध्यम से किया जा सकता है। एक बात साफ हो जानी चाहिए कि सडक हादसों को रोकना है, न्यूनतम स्तर पर लाना है तो सुरक्षा मानकों की जानकारी और पालना सुनिश्चित करने के लिए गंभीर होना ही होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 3 अक्टूबर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, हस्त नक्षत्र दिन 3:32 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 4:24 तक, किस्तुघ्न करण दिन 1:39 तक, चन्द्रमा शुक्रवार प्रातः 5:06 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज से शारदीय नवरात्रा आरम्भ होगा। आज अग्रसेन जयन्ती और महामातामह श्राद्ध है। आज घट स्थापना का सर्वश्रेष्ठ समय प्रातः 6:24 से 8:45 तक है। उसके अलावा अभिजित मुहूर्त दिन 11:52 से 12:39 तक भी घट स्थापना की जा सकती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:32 तक, चर 10:48 से 12:16 तक, लाभ-अमृत 12:16 से 3:12 तक, शुभ 4:39 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:24, सूर्यास्त 6:08

मेष
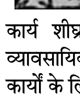
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
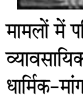
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
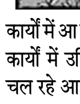
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। रचनात्मक कार्यों में समय व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
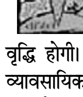
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मकर
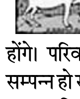
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी अभी बनी रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा।

कुंभ

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

कर्क

परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

समाजवाद के प्रणेता अहिंसावादी प्रथम वैश्य सम्राट महाराजा अग्रसेन

डॉ. जे.के. गर्ग

निर्विवाद रूप से किसी भी राष्ट्र या समाज एवं परिवार को उन्नत विकसित और कल्याणकारी बनाने के लिये उसके आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तम्भों का मजबूत होना अति आवश्यक है। इन चारों स्तंभों को दृढ़ करके ही राष्ट्र को प्रगतिशील एवं विकसित देश बनाया जा सकता है। लगभग 5144 वर्ष पूर्व महाराजा अग्रसेनजी इन्हीं चार स्तंभों को मजबूत कर समद्धशाली, कल्याणकारी समाजवादी एवं शक्तिशाली राज्य का निर्माण करने में सफल हुए थे। अग्रसेन का जन्म द्वापर युग के अंत वह कलयुग के प्रारंभ में लगभग 5145 वर्ष पूर्व अश्विनशुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रताप नगर के सूर्यवंशी राजा वल्लभसेन के यहाँ हुआ था उनकी माताजी का नाम भगवतीदेवी था। प्रतापनगर राजस्थान एवं हरियाणा राज्य के बीच सरस्वती नदी के किनारे स्थित हुआ करता था।

ऐसा भी कहा जाता है कि महाराजा अग्रसेन भगवान श्रीराम के पुत्र कुश की 34 व्री पीढ़ी के थे। इस मान्यता के मुताबिक अग्रवंशी भगवान राम के वंशस होते है। कहा जाता है कि महाभारत के दसवें दिन राजा वल्लभसेन वीर गति को प्राप्त हो गये थे। पन्द्रह वर्ष की अल्प आयु मे ही अग्रसेनजी ने महाभारत के धर्मयुद्ध में पांडवों की तरफ से भाग लिया था। भगवान श्रीकृष्ण भी उनकी बुद्धीमता, शोर्य, पराक्रम, समझबूझ से अत्यंत प्रभावित हुए थे और उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि युवा अग्रसेन भविष्य में एक पराक्रमी सम्राट एवं युग पुरुष होंगे।

युवा अग्रसेन ने सर्पों के राजा नागराज की बेटी राजकुमारी माधवी के स्वयंवर में अनेकों राजाओं, राजकुमारों और स्वर्ग के सम्राट इंद्रदेव के साथ भाग लिया था। स्वयंवर में राजकुमारी माधवी ने राजकुमार अग्रसेन का चयन कर उनका वरण किया। अग्रसेन माधवी के विवाह से दो विभिन्न संस्कृतियों एवं परिवारों का मिलन हुआ क्योंकि राजकुमार अग्रसेन जहाँ एक सूर्यवंशी थे वहीं राजकुमारी माधवी एक नागवंशी थी। राजकुमारी माधवी का विवाह अग्रसेन जी के साथ हो जाने से इंद्रदेव ने अपने आप को अपमानित महसूस किया और वे ईर्ष्या ग्रस्त होकर बहुत क्रोधित हुए और इन्द्र ने प्रताप नगर के निर्दोष स्त्री-पुरुषों, बालक-बालिकाओं को प्रताड़ित करने हेतु प्रताप नगर पर कई वर्षा तक बारिश नहीं होने दी जिससे प्रताप नगर में भयानक अकाल पड गया। सम्राट अग्रसेन ने अपनी प्रजा एवं प्रताप नगर की सुरक्षा और राजधर्म के पालनार्थ इंद्र के खिलाफ धर्मयुद्ध प्रारम्भ कर दिया। युद्ध में इंद्र की पराजय हुई। पराजित इंद्र ने नारदमुनि से अनुनय-विनय कर उनकी सम्राट अग्रसेन से सुलह कराने का निवेदन किया। नारद मुनि ने दोनो के बीच में मध्यस्थता करके सुलह करवा दी।

यहाँ यह स्मरण रखने वाली बात है कि महाभारत के युद्ध के कारण जन धन की बहुत तबाही हुई थी इसलिए अपने राज्य की खुशहाली के वास्ते महाराजा अग्रसेन ने काशी जाकर भगवान शिव की कठोर तपस्या की जिससे खुश हो कर भगवान शिवजी ने उन्हें दर्शन दिया और उनको आदेश दिया कि वे महालक्ष्मी जी की पूजा और ध्यान करे। अग्रसेन ने महालक्ष्मी की पूजा आराधना शुरू कर दी। माँ लक्ष्मी ने उनकी परोपकार हेतु की गई तपस्या से खुश होकर उन्हें दर्शन दिए और आदेश दिया कि वे अपना एक नया राज्य बनायें और क्षत्रिय परम्परा के स्थान पर वैश्य परम्परा अपना लें। माता लक्ष्मी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि उनके और उनके अनुयायियों को कभी भी किसी चीज की कमी नहीं होगी, वे सभी सदैव सुख-सुविधा युक्त जीवन व्यापन करगें। लक्ष्मी माता का आदेश मान कर अग्रेसेन महाराज ने क्षत्रिय कुल को त्याग वैश्य धर्म को अपना लिया, इस प्रकार महाराजा अग्रसेन प्रथम वैश्य सम्राट बने।

देवी महालक्ष्मी से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद राजा अग्रसेन ने नए राज्य की स्थापना एवं उस राज्य की राजधानी के चयन हेतु रानी माधवी के साथ भारत का भ्रमण किया, अपनी यात्रा के दौरान वे एक जगह रुके जहाँ उन्होंने देखा कि कुछ शेर और भेड़िये के बच्चे साथ खेल रहे थे। राजा अग्रसेन ने रानी माधवी से कहा के ये बहुत ही शुभ दैवीय संकेत है जो हमें इस पुण्य भूमि पर हमारे राज्य की राजधानी को स्थापित करने का इशारा कर रहा है। ऋषि मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नये राज्य का नाम अग्रेयगण रखा गया जिसे कालान्तर में यह स्थान अग्रोहा नाम से जाना गया। अग्रोहा हरियाणा में हिसार के पास हैं। आज भी यह स्थान अग्रवाल समाज के लिए तीर्थ स्थान के समान है। यहां भगवान अग्रसेन, माता माधवी और कुलदेवी माँ लक्ष्मी जी के भव्य और दर्शनीय मंदिर है।

महाराजा अग्रसेन जी के राज्य में यह परंपरा थी कि जो भी व्यक्ति या परिवार उनके राज्य में आकर बसता था, अग्रोहा के सभी निवासी नवागंतुक नागरिक को सम्मान और स्वागत के रूप में एक रुपया और एक ईंट भेंट करते थे। कहा जाता है कि उस समय अग्रोहा में लगभग एक लाख से अधिक परिवार बसते थे। इस प्रकार उनके राज्य में आने वाला हर नागरिक एक लाख रुपये तथा एक लाख ईंटों का स्वामी बन जाता था। इन रुपयों से वह अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर लेता था वहीं ईंटों से अपना खुद का मकान बना लेता था। यही परंपरा समाजवाद की ही मिसाल है निसंदेह अग्रसेन जी ने विश्व में सबसे पहले समाजवादी राष्ट्र की स्थापना की थी।

पशु बलि बंद करने वाले प्रथम सम्राट कुलदेवी माता लक्ष्मी की कृपा से भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र हुये। महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। उन दिनो यज्ञों में पशुबलि दी जाती थी। जिस समय 18 वें यज्ञ में जीवित पशुओं की बलि देने की तैयारी की जा रही थी उस वक्त एक घोडा बली के लिए लाया गया। महाराज अग्रसेन ने देखा कि घोड़े की निरीह आँखों से अविरल आंसू बह रे थे और वो निरीह पशु यज्ञ की वेदी से दूर जाने और वहां से भागने की कोशिश कर रहा था। इस दृश्य को देख कर महाराज अग्रसेन का दिल दया से भर गया और वे आहत भी हुए। उन्होंने सोचा कि ये कैसा यज्ञ है जिसमें हम मूक जानवरों की बलि चढ़ाते है? महाराजा अग्रसेन ने पशु वध को बंद करने के लिये अपने मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श किया और अपने मंत्रिमंडल के विचारों के विपरीत जाकर उन्हें समझाया कि अहिंसा कभी भी कमजोरी नहीं होती है बल्कि अहिंसा तो एक दूसरे के प्रति प्रेम और अपनापन जगाती है। महाराजा अग्रसेन ने तुरंत प्रभाव से मुनादी करवा दी की उनके राज्य मे कभी भी कोई हिंसा और जानवरों की हत्या नहीं होगी। अग्रसेन जी अहिंसा परमो धर्म का संदेश देने वाले प्रथम महाराजा बन अहिंसा का संदेश उन्होंने भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के अहिंसा के संदेश से 2500 साल पहले दे दिया था।

भगवान अग्रसेन ने एक तांत्रिक शासन प्रणाली के स्थान पर एक नयी प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था को जन्म दिया। महाराजा अग्रसेन जी पहले शासक थे जिन्होंने सहकारिता के आदर्श को सामाजिक जीवन में प्रतिस्थापित किया। अग्रवाल के 18 गोत्र एवं उनका नामकरण हममें से अधिकांक्ष लोगों की मान्यता है कि अग्रवालों के 18 या साढ़े सत्तरह गोत्रो के नाम उनके 18 पुत्रों के नाम से रखें गये है किन्तु वास्तविकता में गोत्रो के नाम 18 यज्ञ करवाने वाले ऋषियों के नाम से है। महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन को 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। माना जाता है कि इन 18 यज्ञों को ऋषि मुनियों ने सम्पन्न करवाया और इन्हीं ऋषि-मुनियों के नाम पर ही अग्रवंश के गोत्रों का नामकरण हुआ। प्रथम यज्ञ के पुरोहित स्वयं गर्ग ॠषि बने, उन्होंने राजकुमार विभु को दीक्षित कर उन्हें गर्ग गोत्र से मंत्रित किया। इस प्रकार अग्रवालों के 18 गोत्र हैं। ॠषियों द्वारा प्रदत्त अठारह गोत्रों को भगवान अग्रसेन के 18 पुत्रों के साथ भगवान द्वारा बसाई 18 बस्तियों के निवासियों ने भी धारण कर लिया एक बस्ती के साथ प्रेम भाव बनाये रखने के लिए एक सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि अपने पुत्र और पुत्री का विवाह अपनी बस्ती में नहीं दूसरी बस्ती में करेंगे। आगे चलकर यह व्यवस्था गोत्रों में बदल गई जो आज भी में प्रचलित है। राज्य के उन्हीं 18 गणों से एक-एक प्रतिनिधि लेकर उन्होंने लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना की, जिसका स्वरूप आज भी हमें भारतीय लोकतंत्र के रूप में दिखाई पडता है। महाराजा अग्रसेन ने परिश्रम से खेती, व्यापार एवं उद्योगों से धनोपार्जन के साथ-साथ उसका समान वितरण और आय से कम खर्च करने पर बल दिया। जहां एक ओर अग्रसेन जी ने वैश्य जाति को न्याय पूर्ण व्यवसाय का प्रतीक तराजू प्रदान किया वहीं दूसरी ओर उन्होंने अपनी प्रजा को आत्मरक्षा के लिए शास्त्रों के उपयोग की शिक्षा भी प्रदान करवाई थी। कुलदेवी महालक्ष्मी से परामर्श पर वे आग्रेय गणराज्य का शासन अपने ज्येष्ठ पुत्र विभु के हाथों में सौंपकर तपस्या करने चले गए। वर्तमान में अग्रवंशियों की संख्या लगभग आठ करोड़ है। अग्रसेन जी के वंशज आज भी उन्हीं की विचारधारा से प्रभावित होकर जनकल्याण के हितार्थ धर्मशाला, मंदिर, अनाथालय, अस्पताल पुस्तकालय, स्कूल एवं कालेज की स्थापना करने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

सच्चाई तो यही है कि महाराजा अग्रसेन ने अपने विशाल परिवार को हमेशा एकता के सूत्र मे बांध कर एकजुट रक्खा। इसलिए सम्राट अग्रसेनजी ने अपने आपको एक महान एवं सफल मैनेजमेंट गुरु के रूप में स्थापित किय। महाराजा अग्रसेन ओर माता माधवी ने अपने सभी 18 पुत्रों को श्रेष्ठतम संस्कार प्रदान किये थे। महाराजा अग्रसेन को समाजवाद का प्रवर्तक, अहिसां के पुजारी, सुयोग्य प्रशासकएवं आदर्श मैनेजमेंट गुरु के रूप में जाना जाता है आठ करोड़ से ज्यादा अग्रवालों के लिये उनके सिद्धांत हमेशा अनुकरणीय और प्रेरक बने रहेगें। याद करने योग्य बात यह भी है सम्राट अकबर के नवरत्नों में दो नवरत्न अग्रवाल थे। अग्रसेनजी के 5145वें जन्मदिवस पर कोटि कोटि प्रणाम।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

शारदीय नवरात्र आज से, घर-घर होगी घट स्थापना

गरबा-डांडिया की रहेगी धूम, तृतीया तिथि बढ़ने से 10 दिन के होंगे नवरात्र

अजमेर/जोधपुर, (कासं)। सनातन संस्कृति हिंदू धर्म में पितृपक्ष के बाद शारदीय नवरात्रि की शुरुआत होती है, जोकि हर साल आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि के दिन से शुरू होते हैं। तीन अक्टूबर गुरुवार से शारदीय नवरात्र की शुरुआत के साथ ही शहर में गरबा-डांडिया की धूम शुरू हो जाएगी। तृतीय तिथि बढ़ने से नवरात्र दस दिनों 12 अक्टूबर तक होंगे।

शारदीय नवरात्र 3 से 12 अक्टूबर तक मनाए जाएंगे। नवरात्र के पहले दिन से श्रद्धालु घरों में घट स्थापना करेंगे और 10 दिनों तक नियमों का पूर्ण विधि से पालन करते हुए मां दुर्गा की अराधना की जाएगी। नौ दिनों तक चलने वाले नवरात्र पर्व में श्रद्धालु उपवास रख माता के विभिन्न रूपों की पूजा करेंगे, माता की चौकी सजाई जाएगी। जौ रोपाई कर पूजा अर्चना होगी तथा अष्टमी को कंचक पूजन होगा। नवरात्र के पहले दिन शैलपुत्री की पूजा होती है। नवमी के दिन श्रद्धालु कन्या पूजन कर नवरात्र पूजन संपन्न करेंगे।

नवरात्र के अवसर पर श्रद्धालु चुनरी, पूजन सामग्री, मनियारी, फल और बर्तन तथा कन्या पूजन का सामान बेचने वाली दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ जुटी रही। त्यौहारी सीजन शुरू होने के साथ ही बाजारों में भीड़ उमड़ रही है, दुकानदारों के चेहरे पर भी रौनक दिख रही है।

पांडाल में गरबा-डांडिया की मचेगी धूम :- नवरात्रि पर इस बार भी शहर पूरी तरह उत्सव में डूबने को आतुर दिखाई दे रहा है। शहर में छोटे-बड़े पांडालों में भक्त नाचते गाते मां अंबे को रिझाएंगे। शहरवासी के साथ इवेंट आयोजक भी तैयारी जोर-शोर से कर रहे हैं। विभिन्न स्थानों पर गरबा डांडिया होगा। कई जगह प्रतियोगिताएं भी आयोजित होंगी।

पंडित आचार्य पवन शर्मा ने बताया कि तृतीया तिथि की वृद्धि होने के कारण शारदीय नवरात्रि 3 से 12 अक्टूबर तक दस दिनों तक होंगे। नवमी की पूजा और विजयादशमी पर्व भी एक ही दिन मनाया जाएगा। इस बार 5 एवं 6 अक्टूबर को तृतीया तिथि रहेगी। इस कारण शारदीय नवरात्रि का समापन 12 अक्टूबर को होगा और इसी दिन दशहरा भी मनाया जाएगा। अनीष व्यास ने बताया कि तृतीया तिथि 5 अक्टूबर को प्रातरू 5:31 बजे शुरू होकर अगले दिन 6 अक्टूबर सुबह 7:50 बजे तक रहेगी। यह तिथि दोनों दिन के सूर्योदय को स्पर्श करेगी। इसलिए दोनों दिन तृतीया का पूजन होगा।

■ **नवरात्र पर चुनरी, पूजन सामग्री, मनियारी, फल और बर्तन तथा कन्या पूजन का सामान बेचने वाली दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ जुटी रही**

मेहरानगढ़ दुर्ग में चामुण्डा माताजी के दर्शन प्रातः सात बजे से सायं पांच बजे तक होंगे : जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग में चामुण्डा माताजी के मंदिर में आसोजी नवरात्रा का प्रारम्भ कुंभ स्थापना के साथ गुरूवार 3 अक्टूबर की होगा। नवरात्रा में मंदिर में दर्शन की व्यवस्था प्रातः 7 बजे से शाम 5 बजे तक रहेगी। मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट के महाप्रबंधक जगत सिंह राठौड़ ने बताया कि सतवर्ती पाठ का संकल्प और स्थापना का मुहूर्त सुबह 1 2.15 से 1. 15 बजे के बीच का निकला है। जोधपुर राजपरिवार की इष्ट देवी मां चामुण्डा की पूजा अर्चना करने के लिए पूर्व महाराजा गजसिंह व हेमलता राज्ये उपस्थित रहेंगे। घनश्याम त्रिवेदी ब्रह्म मुहूर्त्त में मां चामुण्डा, मां कालकाजी, मां सरस्वती एवं बच्छराजजी की मूर्तियों को पवित्र जल से स्नान करायेंगे और लाल रंग की कोर तुर्रियां लगी पोषाक धारण करवायेंगे। प्रातः काल मंदिर के शिखर पर मुख्य ध्वजा चढ़ाई जायेगी और चारों दिशाओं में छोटी ध्वजाएं चढ़ाई जायेगी।

श्री चामुण्डा मंदिर के पास 'उपासनालय' कक्ष में नौ वेदपाठी ब्राह्मण स्थापना 3 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक दुर्गापाठ का वाचन करेंगे। नवरात्रा के अंतिम दिन से पूर्व होमाष्टमी की रात हवन प्रारंभ किया जायेगा जिसकी पूर्ण आहुति शनिवार ,12 अक्टूबर नवमी को प्रातः 10.35 से 11 बजे के बीच में गजसिंह एवं हेमलता राज्ये द्वारा की जायेगी व गज सिंह की तिलक आरती प्रातः 11.01 से 11.25 तक व नवमी को प्रातः 11.55 से 12.10 के बीच थापना जी के उत्थापना का मुहूर्त्त होगा।

उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी प्रशासन के सुझावानुसार सभी व्यवस्थाओं को अन्तिम रूप दिया गया है। जयपोल के बाहर से ही एक पंक्ति में लाईनों की व्यवस्था की गई जो मंदिर तक रहेगी तथा डी.एफ.एम.डी. गेट से ही जयपोल व फतेहपोल से दर्शनार्थियों को प्रवेश दिया जायेगा। पट्टे पर महिलाओं, बच्चों एवं वृद्धजनों के लिये आने-जाने की व्यवस्था की गई है वे वहीं से जायेंगे और वहीं से आयेगे। इसी प्रकार पुरुषों एवं युवाओं के लिये सलीम कोट से होते हुए बसन्त सागर से आने-जाने की व्यवस्था की गई है।

'यूरिया-डीएपी के साथ टैगिंग कर अन्य उत्पाद बेचने वालों पर कार्यवाही करें'

जयपुर। राज्य में इस वर्ष अच्छा मानसून रहने के कारण फसलों की बुआई का क्षेत्रफल बढ़ने के साथ उर्वरकों की मांग भी बढ़ रही है। कृषकों को मांग के अनुसार समय पर उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार हर सम्भव प्रयास कर रही है। आयुक्त कृषि चिन्मयी गोपाल ने बताया कि उर्वरक विक्रेताओं द्वारा यूरिया, डीएपी, एसएसपी एवं एनपीके उर्वरको के साथ अन्य उत्पाद सल्फर, हरबीसाईट, पेसटीसाईड, सुक्ष्म तत्व मिश्रण, बायो फर्टिलाईजर आदि उत्पाद कृषकों द्वारा नही चाहने पर भी टैगिंग कर बेचे जा रहे है, जो कि अनुचित है। कृषि आयुक्त ने जिलों में कार्यरत विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि उर्वरक विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों का समय-समय पर निरीक्षण कर उर्वरको के विक्रय पर निरन्तर निगरानी रखते हुये उर्वरकों के साथ अन्य उत्पादों की टैगिंग करने वाले विक्रेताओं के विरूद्ध उर्वरक नियंत्रण आदेश, 1985 के प्रावधन के अनुसार कार्यवाही करें।

■ **आयुक्त कृषि चिन्मयी गोपाल ने जिलों में कार्यरत विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि उर्वरक विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों का समय-समय पर निरीक्षण कर उर्वरकों के विक्रय पर निरन्तर निगरानी रखें**

उन्होंने कहा कि विभागीय अधिकारी उर्वरक विक्रेताओ के पास उपलब्ध स्टॉक का पीओएस स्टॉक से मिलान कर भौतिक सत्यापान करें। जिलें में उर्वरको की कही भीं कोई कालाबाजारी एवं जमाखोरी नही हो। जिले में उर्वरकों के वितरण पर सतत् निगरानी रखते हुये जिलें के कृषकों को ही उर्वरको का वितरण करें।

रामप्रसाद सराफ चूरू नागरिक परिषद कोलकाता के अध्यक्ष बने

जयपुर। चूरू मूल के कोलकाता प्रवासी अतिंद्रा ग्रुप के मुखिया रामप्रसाद सराफ चूरू नागरिक परिषद कोलकाता के नये अध्यक्ष चुने गए हैं।

परिषद की वार्षिक बैठक में ताराचन्द मनोत, पवन धानुका उपाध्यक्ष, जगतसिंह बैद सचिव, भरत बैद सचिव व सुमित सेकसरिया कोषाध्यक्ष चुने गए। वहीं निर्वतमान अध्यक्ष बीएल सोती बतौर आईपीपी परिषद से जुड़े रहेंगे। अध्यक्ष सराफ ने कहा कि वे कोलकाता एवं चूरू में सामाजिक सरोकारों से परिषद को और अधिक जोड़ेंगे तथा अपने कार्यकाल में सभी को जोड़ते हुए अपना अधिकतम योगदान देंगे। इस अवसर पर अध्यक्ष रामप्रसाद सराफ एवं नवीन कार्यकारिणी का आईपीपी नारायण जैन, डॉ. एस.के. शर्मा, बसंत पारख, प्रकाश पारख, राजेंद्र बछावत, सुनील सारड़ा, शांतिलाल कोठारी, कांतिलाल सुराणा, पवन अग्रवाल, दीपक जैन, मंजु अग्रवाल, कुलदीप मनोत आदि ने अभिनंदन किया।

■ **परिषद की वार्षिक बैठक में ताराचन्द मनोत, पवन धानुका उपाध्यक्ष, जगतसिंह बैद सचिव, भरत बैद सचिव व सुमित सेकसरिया कोषाध्यक्ष चुने गए**

साहित्य, संस्कृति एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़ी प्रयास संस्थान चूरू के सचिव कमल शर्मा के मुताबिक संस्था को भूमि क्रय हेतु सराफ ने दो लाख इक्कावन रूपये की सहायता प्रदान की थी। साथ ही संस्थान की तिमाही राजस्थानी पत्रिका लीलटांस के प्रकाशन के लिए भी अस्सी हजार से अधिक राशि का आंशिक आर्थिक सहयोग किया था।